نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ؕ﴿۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

आग में हैं हमेशा उस में रहेंगे वोही तमाम मख़्लूक़ में बदतर हैं बेशक जो

اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ؕ﴿۷﴾ جَزَآؤُهُمْ

ईमान लाए और अच्छे काम किये वोही तमाम मख़्लूक़ में बेहतर हैं उन का सिला

عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ

उन के रब के पास बसने के बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बहें उन में हमेशा हमेशा

اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ﴿۸﴾ ع

रहें **अल्लाह** उन से राज़ी[13] और वोह उस से राज़ी[14] येह उस के लिये है जो अपने रब से डरे[15]

ركوعها ١ ﴿٩٩﴾ سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ ﴿٩٣﴾ اٰياتها ٨

सूरए ज़िल्ज़ाल मदनिय्या है, इस में आठ आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۙ﴿۱﴾ وَ اَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۙ﴿۲﴾ وَ

जब ज़मीन थरथरा दी जाए[2] जैसा उस का थरथराना ठहरा है[3] और ज़मीन अपने बोझ बाहर फेंक दे[4] और

قَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۚ﴿۳﴾ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۙ﴿۴﴾ بِاَنَّ رَبَّكَ

आदमी कहे इसे क्या हुवा[5] उस दिन वोह अपनी ख़बरें बताएगी[6] इस लिये कि तुम्हारे रब

اَوْحٰى لَهَا ؕ﴿۵﴾ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۬ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ؕ﴿۶﴾

ने उसे हुक्म भेजा[7] उस दिन लोग अपने रब की त़रफ़ फिरेंगे[8] कई राह हो कर[9] ताकि अपना किया[10] दिखाए जाएं

ख़ालिस इस्लाम के मुत्तबेअ़ हो कर **13 :** और उन के इत़ाअ़त व इख़्लास से **14 :** उस के करम व अ़त़ा से **15 :** और उस की ना फ़रमानी से बचे। **1 :** सूरए "اِذَا زُلْزِلَت" जिस को "सूरए ज़ल्ज़ला" भी कहते हैं, मक्किय्या व बक़ौले मदनिय्या है। इस में एक रुकूअ़, आठ आयतें, पेंतीस कलिमे और एक सो उन्तालीस हर्फ़ हैं। **2 :** क़ियामत क़ाइम होने के नज़्दीक या रोज़े क़ियामत **3 :** और ज़मीन पर कोई दरख़्त कोई इमारत कोई पहाड़ बाक़ी न रहे, हर चीज़ टूट फूट जाए। **4 :** या'नी ख़ज़ाने और मुर्दे जो उस में हैं वोह सब निकल कर बाहर आ पड़ें। **5 :** कि ऐसी मुज़्त़रिब हुई और इतना शदीद ज़ल्ज़ला आया कि जो कुछ इस के अन्दर था सब बाहर फेंक दिया। **6 :** और जो नेकी बदी उस पर की गई सब बयान करेगी। ह़दीस शरीफ़ में है कि हर मर्द व औ़रत ने जो कुछ इस पर किया उस की गवाही देगी कहेगी : फ़ुलां रोज़ येह किया फ़ुलां रोज़ येह। (ترمذی) **7 :** कि अपनी ख़बरें बयान करे और जो अ़मल उस पर किये गए हैं उन की ख़बरें दे **8 :** मौक़िफ़े ह़िसाब से **9 :** कोई दहनी त़रफ़ से हो कर जन्नत की त़रफ़ जाएगा कोई बाईं जानिब से दोज़ख़ की त़रफ़। **10 :** या'नी अपने आ'माल की जज़ा।

www.dawateislami.net

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝٧ وَ مَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ

तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे

شَرًّا يَّرَهٗ ۝٨

उसे देखेगा[11]

ع ٢٤

اٰياتها ١١ ۝ ١٠٠ سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ ١٤ ۝ ركوعها ١

सूरए आदियात मक्किय्या है, इस में ग्यारह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

وَ الْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۝١ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۝٢ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۝٣

क़सम उन की जो दौड़ते हैं सीने से आवाज़ निकलती हुई[2] फिर पथ्थरों से आग निकालते हैं सुम मार कर[3] फिर सुब्ह़ होते ताराज करते हैं[4]

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۝٤ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۝٥ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ

फिर उस वक़्त गुबार उड़ाते हैं फिर दुश्मन के बीच लश्कर में जाते हैं बेशक आदमी अपने रब का

لَكَنُوْدٌ ۝٦ وَ اِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۝٧ وَ اِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ

बड़ा नाशुक्रा है[5] और बेशक वोह इस पर[6] ख़ुद गवाह है और बेशक वोह माल की चाहत में ज़रूर

لَشَدِيْدٌ ۝٨ اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُوْرِ ۝٩ وَ حُصِّلَ مَا فِي

कर्रा है[7] तो क्या नहीं जानता जब उठाए जाएंगे[8] जो क़ब्रों में हैं और खोल दी जाएगी[9] जो

11 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि हर मोमिन व काफ़िर को रोज़े क़ियामत उस के नेक व बद आ'माल दिखाए जाएंगे, मोमिन को उस की नेकियां और बदियां दिखा कर अल्लाह तआ़ला बदियां बख़्श देगा और नेकियों पर सवाब अ़ता फ़रमाएगा और काफ़िर की नेकियां रद कर दी जाएंगी क्यूं कि कुफ़्र के सबब अकारत हो चुकीं और बदियों पर उस को अ़ज़ाब किया जाएगा। मुह़म्मद बिन का'ब क़ुरज़ी ने फ़रमाया कि काफ़िर ने ज़र्रा भर नेकी की होगी तो वोह उस की जज़ा दुन्या ही में देख लेगा यहां तक कि जब दुन्या से निकलेगा तो उस के पास कोई नेकी न होगी और मोमिन अपनी बदियों की सज़ा दुन्या में पाएगा तो आख़िरत में उस के साथ कोई बदी न होगी। इस आयत में तरग़ीब है कि नेकी थोड़ी सी भी कारआमद है और तरहीब (डराना) है कि गुनाह छोटा सा भी वबाल है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह फ़रमाया है कि पहली आयत मोमिनीन के ह़क़ में है और पिछली कुफ़्फ़ार के। 1 : "सूरए وَالْعٰدِيٰت" बक़ौले ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ मक्किय्या है और बक़ौले इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما मदनिय्या। इस में एक रुकूअ़, ग्यारह आयतें, चालीस कलिमे और एक सो त्रेसठ ह़र्फ़ हैं। 2 : मुराद इन से ग़ाज़ियों के घोड़े हैं जो जिहाद में दौड़ते हैं तो उन के सीनों से आवाज़ें निकलती हैं। 3 : जब पथरीली ज़मीन पर चलते हैं। 4 : दुश्मन को 5 : कि उस की ने'मतों से मुकर जाता है। 6 : अपने अ़मल से 7 : निहायत क़वी व तुवाना है और इबादत के लिये कमज़ोर। 8 : मुर्दे 9 : वोह ह़क़ीक़त या वोह नेकी व बदी।

www.dawateislami.net